अंक : 3-4 (संयुक्तांक), वर्ष : 2022-23

ISSN-2454-8286

शोध-मनीषा

(शोध-पत्रों तथा आलेखों का पूर्व-समीक्षित वार्षिक संकलन)

सम्पादन

प्रो. (डॉ.) सुधा कुमारी

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

बाबासाहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

अनुक्रम

संपादकीय	: प्रो. (डॉ.) सुधा कुमारी	07
'लमसेना' : आदिवासी जीवन पर केंद्रित हिंदी की प्रथम आंचलिक नाट्यकृति	: प्रो. (डॉ.) प्रमोद कुमार सिंह	09
शिशु साहित्य में रवींद्रनाथ टैगोर का योगदान	: प्रो. (डॉ.) समीरण कुमार पॉल	11
गोपाल सिंह 'नेपाली' : फिल्मी दुनिया का सफर	: प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय	13
उपेंद्रनाथ 'अश्क' के नाटकों का शिल्प-संयोजन एवं नारी-चेतना	: प्रो. (डॉ.) सुधा कुमारी	19
तुलनात्मक साहित्य अध्ययन : मूल्यगत राष्ट्रीयता की पहचान का स्रोत	: प्रो. (डॉ.) देवशंकर नवीन	25
धूमिल की काव्य-दृष्टि	: प्रो. (डॉ.) त्रिविक्रम नारायण सिंह	33
आदिकवि वाल्मीकि : रामकाव्य के परम तत्त्व की मीमांसा	: प्रो. (डॉ.) कल्याण कुमार झा	36
हिमाचल की समकालीन हिंदी कविता : कुछ रंग कुछ छायाएँ	: प्रो. (डॉ.) चंद्रकांत सिंह	41
कबीर का कवित्व	: डॉ. वीरेंद्र नाथ मिश्र	46
समकालीन हिंदी आलोचना : परंपरा और परिदृश्य	: डॉ. राकेश रंजन	49
बेटा भेल-लोकी लेल, बेटी भेल-फेंकी देल	: डॉ. सुशांत कुमार	59
जैनेंद्र की कहानियों में स्त्री और प्रकृति	: डॉ. उज्ज्वल आलोक	68
मानव-संस्कृति के विकास के संदर्भ में कामायनी का मूल्यांकन	: डॉ. संध्या पांडेय	74
रचना-प्रक्रिया और फैंटेसी (संदर्भ : अँधेरे में)	: डॉ. आलोक कुमार सिंह	83
हिंदी के समकालीन हास्य-व्यंग्यकारों की आत्मकथा : एक अनुशीलन	: डॉ. हेमा कुमारी	89
महाकवि मतिराम : आचार्य और कवि का द्वंद्व	: डॉ. संजय कुमार यादव	92
प्रतिबंधित हिंदी साहित्य में कृषक	: डॉ. मधुलिका बेन पटेल	101
मध्यकालीन दलित संत कवयित्रियाँ : दलित स्त्री-विमर्श की भक्तिधारा	: डॉ. प्रियंका सोनकर	104
'गोदान' और 'छै बीघा जमीन' का तुलनात्मक अध्ययन	: डॉ. कुमारी सीमा	109
प्रेमचंद की दलित कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन	: डॉ. साक्षी शालिनी	113
दिल्ली के न थे कूचे औराक-ए-मुसव्वर थे	: कुमार मंगलम	116
राष्ट्रीय आंदोलन, हिंदी पत्रकारिता और प्रेस ऐक्ट	: डॉ. पुष्पेंद्र कुमार	121
भक्ति काव्य में संगीत	: डॉ. कुमारी गीतांजली	129
उतर आई ग़ज़ल इस दौर में, कोठी के ज़ीने से...	: डॉ. राहुल मिश्र	133
भारतेंदु और हिंदी नवजागरण	: डॉ. कपिलदेव कु. पासवान	137
विष्णु प्रभाकर के 'बंदिनी' नाटक की 'उमा'	: डॉ. रामप्रवेश रजक	140
आदिवासी अस्मिता और आज की कविता	: उपेंद्र प्रसाद	142
भारतीय उपन्यास में स्त्री-अस्मितामूलक विमर्श	: केसरबेन राजपुरोहित	145
तुलसीदास के भरत	: अमन कुमार	149
नई कहानी की नवीनता	: वाङ मेई चन	156
नामवर सिंह का प्रारंभिक लेखन : एक विहंगावलोकन	: समीक्षा सुरभि	160
बलचनमा : एक आंचलिक उपन्यास	: शारदा सिन्हा	165
हिंदी दलित साहित्य : आरंभ एवं स्वरूप	: गौतम कुमार	167
हिंदी पत्रकारिता के आरंभिक चरण : काल-विभाजन	: मुकेश कुमार	173

ISSN-2454-8286

हिमाचल की समकालीन हिंदी कविता : कुछ रंग, कुछ छायाएँ

प्रो. (डॉ.) चंद्रकांत सिंह
प्रोफेसर, हिंदी-विभाग,
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश)।

हिमाचल का साहित्यिक फलक विस्तीर्ण है। यहाँ विभिन्न विधाओं में अनगिनत साहित्य-सेवी कार्य कर रहे हैं। बात यदि हिमाचली हिंदी कविता की करें तो यह विविधता का संसार लिए है। इस कविता में पहाड़ का धैर्य, नदियों की रवानगी एवं वनस्पतियों की शस्य श्यामला भाव-भंगिमा के साथ पुरखों की विरासत है। हिमाचल प्रदेश ने जिस तरह अपनी संस्कृति, मेले-उत्सवों आदि को सहेजा है, कमोबेश ठीक वैसे ही अपनी स्वायत्त पहचान को भी महत्त्व दिया है। हिमाचल के कवियों ने परंपरा एवं इतिहास-बोध के साथ रहन-सहन, जीवन-शैली आदि का कुशलता के साथ चित्रण किया है। हिमाचल की काव्यधारा को प्रकृति एवं मनुष्य की सुंदर साझेदारी कह सकते हैं, जहाँ प्रकृति अपनी पूरी चटक के साथ दिखती है। यही नहीं, जनसाधारण की सादगी, जीवटता और दुर्धर्ष जीवन-संघर्ष की आकुल कथाएँ कविताओं में धीमे-धीमे उतरती हैं। हिमाचल की समकालीन हिंदी कविता को बाजारवाद और वैश्वीकरण की आँधी से बचाने वाली कविता कह सकते हैं, जहाँ कवियों ने निजी घर-बार को बचाने का प्रयास किया है। कविताएँ अपने सृजनात्मक सौंदर्य से चकित भी करती हैं और चमत्कृत भी। इन कविताओं में एक विस्तृत भूलोक के निर्माण का स्वप्न है जिससे कि मनुष्यता सुरक्षित रह सके। हिमाचल के कवि ऐसे रंगों का प्रयोग करते हैं जिनसे कि निजता और स्वायत्तता का बचाव हो, साथ ही धरती पर रह रहे प्राणियों की संवेदनात्मक अभिरक्षा भी हो सके। यहाँ की समकालीन हिंदी कविता उन सभी दृश्यों पर जिरह करती है जिन्हें समय और राजनीति ने सैकड़ों वर्ष पीछे धकेल दिया है। जिन्हें बचाया जाना चाहिए, उन्हें कविता बचाती है। यही नहीं, वह सृजनात्मक लोक का ऐसा मुहावरा गढ़ती है जिससे कि कविता मात्र मनोरंजन न रहे और न ही व्यक्ति-विशेष की पीड़ा का महाख्यान लगे। समकालीन हिमाचली कविताएँ भाव-बोध में अत्यंत विस्तीर्ण हैं। प्रवास की पीड़ा, रोजगार का संकट, जीवटता, अस्तित्वगत संकट आदि इन कविताओं में हैं। जब भी हिमाचल की समकालीन हिंदी कविता का पोर्ट्रेट तैयार किया जाएगा, इसमें प्रकृति और मानवीय संबंधों की सुंदर दृश्यावलियाँ दिखेंगी; यही नहीं, नानाविध क्रिया-व्यापार भी उद्घाटित होंगे जो मनुष्यता को बचाने के साथ मनुष्य की प्रज्ञा-शक्ति का भी विकास करते हैं।

कुमार कृष्ण हिमाचल की समकालीन हिंदी कविता के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में संबंधों की भाव-ऊष्मा, निसर्ग के साथ मनुष्य के रागात्मक संबंध एवं पहाड़ी जीवन की सुंदर व्याख्या की है। कुमार कृष्ण की 'कोदो की रोटी' भूख, जिजीविषा एवं जीवटता को दर्शाने वाली महत्त्वपूर्ण कविता है, जहाँ रोटी के बहाने कवि ने मनुष्य की दृढ़ इच्छा-शक्ति को दर्शाया है। अत्यंत कम शब्दों में कवि ने मनुष्य के विकास की समूची कहानी को निरूपित किया है। कुमार कृष्ण इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण कवि हैं कि वे शब्दों का संयम एवं भाषा की सादगी को बखूबी जानते-समझते हैं। अपनी कविताओं में उन्होंने मनुष्यता के पक्ष में महत्त्वपूर्ण भागीदारी प्रस्तुत की है। 'कोदो की रोटी' को याद करते हुए वे ग्रामीण परिवेश और वहाँ के संघर्षों को याद करते हैं जिनकी अनदेखी नहीं की जा सकती। वह स्पष्ट लिखते हैं कि–

ओ साँवली रोटी!
कहाँ खो गई तुम?
अकाल के खिलाफ जंग लड़नेवाली नाजुकमिजाज
तुम्हें ही तो मिला है–
सैकड़ों वर्ष जिंदा रहने का वरदान,
तुम्हारे बारे में जानना चाहते हैं मेरे बच्चे